University in News on 18 March 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

11 साल चला शायरी में खबरों वाला अखबार

लखनऊ विश्वविद्यालय के लिटरेचर फेस्टिवल में हुई काव्य की विभिन्न शैलियों पर चर्चा

माई सिटी रिपोर्टर

लविवि में लिटरेचर फेस्टिवल के दौरान बोलतीं विद्या विंदु सिंह, साथ में पंकज प्रसून, रानू उनियाल, डॉ. अब्बास रजा नैय्यर व एपी पांडेय। संवाद

लखनऊ। लखनऊ नगमों और कहानियों का शहर है। यह दुनिया का एकमात्र शहर है जहां शायरी में अखबार निकलता रहा। द्वारिका प्रसाद खुद रिपोर्टिंग करते थे और खबर को शायरी के रूप में पेश करते थे। 11 साल तक यह सिलसिला चलता रहा। इसके बाद विश्वेश्वर प्रसाद मुनव्वर ने यह परंपरा आगे बढ़ाई। लविवि के उर्दू विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष और शायर प्रो. अब्बास रजा नैयर ने रविवार को परिसर में चल रहे लिटरेचर फेस्टिवल में विद्यार्थियों को यह जानकारी दी।

विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय लिटरेचर फेस्टिवल का दूसरा दिन कविता, कहानी, नाटक और खानपान के नाम रहा। म्यूजिंग इन वर्स नाम के सत्र में लखनऊ की शायरी के साथ ही व्यंग्य, कविता और पद्य की विभिन्न विधाओं पर चर्चा हुई।

प्रो. नैयर ने बताया कि गोमती के किनारे बसा लखनऊ वास्तव में गंगा-जमुनी तहजीब का शानदार उदाहरण है। शायरी की ही करामत रही कि इसने पंडित दयाशंकर को नसीम, आनंद नारायण को मुल्ला, पंडित ब्रजनारायण को चकबस्त के रूप में प्रसिद्धि दिलाई। यहां हिंदू बेगम ने मस्जिद का निर्माण कराया तो मुस्लिम बेगम ने मंदिर बनवाया और झाऊलाल ने कर्बला और इमामबाड़े का निर्माण कराया। मुस्लिम लेखक और कवियों ने भजन लिखकर गाए तो छन्नूलाल दलगीर के नौहे मुहर्रम की जान रहे। इस सत्र का मॉडरेशन प्रो. रानू उनियाल ने किया। आयोजन लविवि के अंग्रेजी विभाग की ओर से किया गया। प्रो. मैत्रेयी प्रियदर्शिनी, प्रो. निशि पांडेय और डॉ. विनीत एम डेविड ने अहम भूमिका निभाई।

पकाने के उसूलों से समृद्ध हुई लखनवी रसोई

लिटरेचर फेस्टिवल में जायका-ए-लखनऊ के सत्र में लखनऊ के खानपान पर बातचीत हुई। प्रो. राकेश चंद्रा ने इस सत्र में मॉडरेटर की भूमिका निभाई। मुमताज कॉलेज की पूर्व प्राचार्य डॉ. नूर खान ने कहा कि लखनऊ की प्रसिद्धि सिर्फ नॉनवेज खाने की वजह से नहीं है। यहां की रसोई में शाकाहारी डिश भी एक से एक हैं। बाकी शहरों के मुकाबले यहां मसालों के बजाय पकाने के उसूलों को महत्व दिया जाता है। मसाला कितना डाला जाएगा, के साथ ही कब डाला जाएगा, लखनऊ की रसोई में इसका पालन भी बखूबी किया जाता है। सत्र में रश्मि वैद, डॉ. राजकुमार सक्सेना ने भी लखनऊ के खानपान को लेकर चर्चा की।

अंत्याक्षरी की बेईमानी ने सिखाई कविता

पद्मश्री विद्या विंदु सिंह ने कहा कि बचपन में अंत्याक्षरी खेलते थे। जिस शब्द से कविता नहीं आती थी, तो अपने आप बनाकर कह देते थे। खेल के हिसाब से यह बेईमानी थी, पर इससे कविता लिखने की प्रेरणा मिली। पंकज प्रसून ने कहा कि किसी भी लेखक और कवि की दो लाइनें पाठक और श्रोताओं के बीच रह जाती हैं, यही उसके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार है। एपी पांडेय ने कहा कि कविता की कोई सीमा नहीं होती है। इसीलिए उन्होंने अंग्रेजी भाषा में गजल लिखी हैं। इस सत्र में चारों विशेषज्ञों ने अपनी कविता, शायरी, व्यंग्य के माध्यम से खूब तालियां बटोरीं।

नई पीढ़ी का व्यंग्य से हो रहा अलगाव

लेखिका सत्या सरन।

अलंकार रस्तोगी।

लखनऊ। लिटरेरी फेस्ट के दूसरे दिन का शुभारंभ प्रो. अल्का पांडेय और समकालीन लेखक अलंकार रस्तोगी की बातचीत के साथ हुआ। इसमें व्यंग्य विधा के लेखन की प्रक्रिया के साथ ही युवा पीढ़ी के व्यंग्य विधा से बढ़ते अलगाव के प्रमुख कारणों पर चर्चा की गई। इसी तरह प्रो. फातिमा रिजवी ने लेखिका सत्या सरन के साथ बातचीत की। सत्या सरन ने महिलाओं का समाज में उत्कर्ष और खुद एक महिला के तौर पर महिलाओं के जीवन में आने वाली चुनौतियों का अवलोकन करते हुए खुद को सशक्त बनाने का संदेश भी दिया। फेस्टिवल का समापन नाटक गुडंबा के मंचन के साथ हुआ। समापन के बाद लुबना सलीम और सलीम आरिफ को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रो. नाजनीन खान ने समापन भाषण दिया। (माई सिटी रिपोर्टर)

अनाज पर खर्च हुआ कम, अब फल-मेवा ज्यादा खा रहे लोग

लविवि के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग में स्थापित भारत लैब की रिपोर्ट

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। बीते दो दशक में देशवासियों ने अनाज पर होने वाले खर्च में 78 फीसदी कटौती कर फल और मेवों पर खर्च करना शुरू कर दिया है। लखनऊ विश्वविद्यालय के बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन विभाग में स्थापित भारत लैब के अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है। फल और मेवों के साथ ही बेवरेज और प्रोसेस्ड फूड पर होने वाले खर्च में भी काफी बढ़ोतरी हुई है।

भारत लैब की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 1999-2000 की आबादी अपनी आय का 22.16 फीसदी भाग अनाज पर करती थी। वर्ष 2022-23 में यह खर्च कम होकर 4.9 फीसदी ही रह गया। खर्च में 78 फीसदी की कमी आई। वहीं, वर्ष 1999-2000 में फल पर होने वाला खर्च महज 1.42 फीसदी था, जो बीस साल में बढ़कर 2.5 फीसदी हो गया। यानी 78 फीसदी बढ़ गया। मेवों पर होने वाला खर्च

दो दशक में अनाज पर होने वाले खर्च में 78 फीसदी की हुई कमी

तो और भी तेजी से बढ़ा है। बीस साल पहले मेवों पर आय का महज 0.3 फीसदी ही खर्च होता था। यह 300 फीसदी बढ़ोतरी के साथ वर्ष 2022-23 में 1.17 फीसदी पहुंच गया। इसी तरह बेवरेज में होने वाला खर्च 112 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ 4.19 फीसदी से 9.62 फीसदी पहुंच गया।

रिपोर्ट में यह भी बताया गया कि 20 साल की अवधि में सर्विस सेक्टर में 2.98 के मुकाबले 5.08 फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। इसी तरह ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के कृषि से इतर अन्य रोजगार में लगने की वजह से औसत मासिक आय 3702 से बढ़कर 4159 पहुंच गई। लविवि प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव के अनुसार, यह बदलाव लोगों की आय व खर्च करने योग्य क्षमता में बढ़ोतरी को दिखाता है।

शिक्षा और घरेलू सामान पर भी खर्च में भी बढ़ोतरी

अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार, 20 साल में शिक्षा और घरेलू सामान पर होने वाले खर्च में भी बढ़ोतरी हुई है। पहले जहां घरेलू सामान पर आय का 2.62 फीसदी खर्च होता था, अब यह बढ़कर 6.89 फीसदी हो गया है। शिक्षा पर 1.93 फीसदी राशि खर्च होती थी जो अब 3.3 फीसदी हो गई है।

कपड़े-जूते और बिजली पर खर्च में कटौती

एक तरफ जहां काफी वस्तुओं पर ज्यादा खर्च हो रहा है तो दूसरी ओर कपड़े-जूते, बिजली और फ्यूल पर खर्च में लोगों ने कटौती की है। रिपोर्ट के अनुसार, फ्यूल और बिजली पर 20 साल पहले आय का 7.52 फीसदी खर्च होता था, अब यह 6.6 प्रतिशत हो गया है। इसी तरह जूते व कपड़ों पर होने वाला खर्च 7.59 से घटकर 6.1 फीसदी रह गया है।

लविवि के 44 छात्र गेट-2024 में सफल

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 44 छात्रों ने गेट-2024 में सफलता हासिल की है। इसमें 32 इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, छह जूलॉजी, तीन वनस्पति विज्ञान, दो मनोविज्ञान और एक सांख्यिकी विभाग का विद्यार्थी है।

लविवि प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर साइंस एंड एआई के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के (अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्ज्वल उपाध्याय, पूजा रंजन), इलेक्ट्रॉनिक के (आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक पटेल, प्रज्ञा प्रकाश), इलेक्ट्रिकल के (गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा) एवं मैकेनिकल के कुशाग्र वर्धन एवं सिविल के (हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार) शामिल हैं। भावना गुप्ता व अर्चना यादव ने मनोविज्ञान व स्टेटिस्टिक्स से संपूर्णानंद गुप्ता ने सफलता हासिल की है। (संवाद)

NBT PAGE 4

फार्मा स्टूडेंट्स ने दिखाया दम

■ एनबीटी संवाददाता, लखनऊ: एलयू में इंस्टिट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिक साइंसेज में 'सिनर्जी 2024' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें बीफार्म और डीफार्मा के स्टूडेंट्स ने क्रिकेट, वॉलीबाल, एथलेटिक्स और प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया। क्रिकेट में डीफार्मा फर्स्ट इयर की टीम ने सेकंड इयर को हराया। वहीं बीफार्मा फर्स्ट इयर ने क्रिकेट में सेकंड इयर की टीम को हराया। डीफार्मा प्रथम वर्ष और बीफार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच फाइनल में बीफार्मा प्रथम वर्ष की टीम विजयी रही। वहीं महिला क्रिकेट में बीफार्मा और डीफार्मा की छात्राओं में मैच खेला गया जिसमें डीफार्मा की टीम जीती।

HINDUSTAN PAGE 6

लखनऊ विश्वविद्यालय साहित्योत्सव का समापन, शहर की गंगा-जमुनी तहजीब की दी गई मिसाल

लखनऊ का सौहार्द ही यहां की खूबसूरती

साहित्य उत्सव

लखनऊ विश्वविद्यालय के दो दिवसीय साहित्योत्सव में पद्मश्री विद्या बिंदु और अन्य अतिथि।

02 दिवसीय साहित्योत्सव में साहित्यकारों और विद्वानों ने रखे विचार

■ कहा, पूरी दुनिया में लखनऊ गंगा जमुनी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। लखनऊ सिर्फ खास नहीं बल्कि बेहद रोचक है। शहर के लोगों में अपना पन, साहित्य में समाज में मिलता है। गंगा जमुनी सभ्यता, संस्कृति का प्रतीक पूरे दुनिया में लखनऊ है। शायद यही वजह भी है लखनऊ में मंदिर को मुस्लिमों ने बनवाया और मस्जिद को हिन्दु ने बनवाया। इतना ही नहीं लखनऊ में उर्दू कवि दयाशंकर को नसीम लखनवी और आनन्द नारायण को मुल्ला कह कर पुकार लिया जाता था। लखनऊ विश्वविद्यालय के दो दिवसीय साहित्योत्सव के आखिरी दिन मालवीय सभागार में लखनऊः म्यूजिंग्स इन वर्स विषय पर साहित्यकारों, विद्वानों ने गंगा जमुनी तहजीब की कई मिसालें सामने रख दीं।

उर्दू विद्वान और एलयू के उर्दू विभाग के पूर्व प्रमुख प्रोफेसर अब्बास रजा नैय्यर ने कहा लखनऊ की सुन्दरता को इमारतों से अलग समझाया। उन्होंने कहा कि लखनऊ की सुंदरता इसका सांप्रदायिक सौहार्द है क्योंकि यहां गुरुमा पंडिताइन ने एक मस्जिद बनवाई थी जिसे 'पंडैन की मस्जिद' के नाम से जाना जाता है, जबकि नवाबों ने अलीगंज मंदिर का निर्माण करवाया था। उन्होंने कहा कि यह केवल लखनऊ ही है जहां उर्दू कवियों को पंडित दयाशंकर 'नसीम' लखनवी, बृज नारायण धर 'चकबस्त', आनंद नारायण को 'मुल्ला' कहकर बुलाया गया। वहीं प्रसिद्ध उपन्यासकार रतन नाथ धर को 'सरशार' कहकर पुकारा जाता था। लखनऊ की सांस्कृतिक सुंदरता के बारे में और अधिक बताते हुए, पद्मश्री विद्या विंदु सिंह ने कहा कि लखनऊ ने ऐसा मोह बांधा है कि लखनऊ को कभी छोड़ने का मन नहीं हुआ। पंकज प्रसून ने अपनी रचनाओं से सभी को हास्य की चाशनी में डुबोया। उन्होंने लखनऊ में टेढ़ीपुलिया को टेढ़ा पुल, बदनारिया बाग को मादा बंदरों का बगीचा, चौपटिया को बेकार चौराहा अभिनव नामकरण ने दर्शकों को हंसा-हंसा कर लोटपोट कर दिया।

जायकों की शब्दावली और फायदे भी गिनाए: लखनऊ विश्वविद्यालय साहित्योत्सव के तीसरे सत्र में जायका ए लखनऊ पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे। प्रो. राकेश चन्द्रा के संचालन में हुए इस सत्र में लखनऊ के तमाम जायको और उनके साथ बने रिश्तों पर बात हुई। डा. रश्मि वैद्य, डा. नूर खान, डा. राजकुमार सक्सेना ने भारत और खासतौर पर लखनऊ के पकवानों की विधि, परोसने का सलीका, उनके रंग और खुशबू की शब्दावली से मिलाया। इसी भी वक्ताओं ने मारवाड़ी भोजन और लखनऊ शहर पकवानों के अन्तर्सम्बंधों पर भी ध्यान आकर्षित किया। डा. राजकुमार ने दक्षिण भारत के मसालेदार पकवान के विशेष लाभ का वर्णन किया। प्रो. निशी पाण्डेय ने मेहमानों को सम्मानित किया। इससे पूर्व साहित्योत्सव का आगाज प्रो. अल्का पाण्डेय समकालीन लेखक अलंकार रस्तोगी के साथ संवाद से हुआ। जिसमें व्यंग्य विधा के लेखन की प्रक्रिया, सार्थकता और वर्तमान युवा पीढ़ी का व्यंग्य विधा से बढ़ते अलगाव के प्रमुख कारणों पर चर्चा हुई। इसी क्रम मे प्रोफेसर फातिमा रिजवी ने लेखिका और सत्या सरन के साथ संवाद किया। सत्या सरन ने महिलाओं का समाज में उत्कर्ष और खुद एक महिला के तौर पर महिलाओं के जीवन में आने वाली चुनौतियों का अवलोकन करते हुए खुद को सशक्त करने का संदेश दिया।

लुबना सलीम के अभिनय ने दर्शकों को बांध लिया

साहित्योत्सव की आखिरी शाम मशहूर लेखक जावेद सिद्दीकी के लिखे नाटक गुडम्बा का मंचन किया गया। जिसका निर्देशन सलीम आरिफ ने किया और लुबना आरिफ ने इस खास कहानी को अपने एकल अभिनय से दर्शकों तक पहुंचाया। खास बात रही कि उम्दा अभिनय और संवाद की टाइमिंग ने दर्शकों पूरे मंचन के दौरान बांधे रखा। गुडम्बा एक दिल छू लेने वाला नाटक है। कहानी एक महत्वाकांक्षी युवा लड़की अमीना (लुबना सलीम) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो शादी कर लेती है और सोचती है कि उसके सपनों का राजकुमार उसकी प्रार्थनाओं से भगवान ने दिया है। वहीं मीना कुमारीः एक मुख्तसर दास्तान को हर्षवर्धन और वसुंधरा शुक्ला ने प्रस्तुत किया।

एलयू के 49 विद्यार्थियों ने गेट में सफलता हासिल की

लखनऊ, कार्यालय संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय के 49 छात्रों को गेट में सफलता मिली है। एक दिन पूर्व जारी हुए परिणाम में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के 32, जूलॉजी के 6, वनस्पति विज्ञान के 3, मनोविज्ञान में दो और सांख्यिकी से एक छात्र को सफलता मिली है।

गेट को उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र (अक्षिता सिंह, सौरव पांडेय, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार आदि शामिल हैं। छात्रों को कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बधाई दी। वहीं, ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विवि के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के तीन छात्रों ने गेट 2024 उत्तीर्ण किया है। विभाग के विषय प्रभारी इंजीनियर कौशलेश शाह ने बताया कि अंतिम वर्ष के छात्र अतुल यादव, शिव कुमार चौधरी, मिंटू सिंह को सफलता मिली है।

नजर और नजरिये ने दिखाया अनूठा लखनऊ

सत्र में चर्चा करती पद्मश्री विद्या विंदु सिंह, साथ में पंकज प्रसून, रानू उनियाल, डा. अब्बास रजा नैय्यर व एपी पांडेय • जागरण

जासं, लखनऊ : ये वो लखनऊ है, जो कहीं और नहीं मिलेगा। यहां मंदिर नवाब बनवाते हैं। मस्जिद गुरुमां बनवाती हैं। यहां पं.छन्नूलाल के गीत हैं तो खय्याम के संगीत भी हैं। यही वो लखनऊ है, जहां गोमती के किनारे-गंगा जमुना की तहजीब मिलती है। इसी लखनऊ ने बहुतों को शायरी-गजल सिखाया है। पहले आप जैसा संस्कार जगाया है। बेघरों का घर है लखनऊ। लखनऊ हम पर फिदा... हम फिदा-ए-लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के साहित्य उत्सव में रविवार को 'लखनऊ : म्यूजिंग्स इन वर्स' पर चर्चा छिड़ी। सबने वक्ताओं की नजर और नजरिये से अनूठे लखनऊ का साक्षात्कार किया।

लखनऊ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी एवं आधुनिक यूरोपियन भाषा विभाग और टैगोर लाइब्रेरी के तत्वावधान में मालवीय सभागार में आयोजित इस सत्र में मॉडरेटर रानू उनियाल सर्वप्रथम वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री विद्याविंदु सिंह से मुखातिब हुईं। अवधी में उनकी लेखन यात्रा को जानने के साथ लोक गीत गुनगुनाने का आग्रह किया तो विद्या विंदु ने कथा हम गाई सिया रघुराई... सुनाया। फिर मुक्ति शीर्षक की अपनी रचना को साझा किया- बरगद की जटाओं में उलझती रही नन्ही चिड़िया ने पूछा मैं उड़ान भरूं... । विद्या ने कहा, कभी-कभी जो हम कहना चाहते हैं, वह कह नहीं पाते या कुछ और कह जाते हैं, वह भी अभिव्यक्ति है। दर्द जब बढ़ता है तो कविता लिखी जाती है। उन्होंने अभिव्यक्ति की इस बेचैनी को कविता- दुख रुकता है द्वार पर ज्यों बरगद की छांव... सुनाकर बयां किया। इस रचना को तालियों का साथ मिला और रानू उनियाल एपी पांडेय की ओर मुड़ीं। पांडेय ने हाइकू - चलती नाव कोहरा ओढ़े नदी अदृश्य छोर प्रस्तुत की। मछुआरे ने लो फेंक दिया जाल सहमा ताल- सुनाकर प्रशंसा बटोरी। फिर- तुमसे अच्छी तुम्हारी तस्वीर कम से कम रंग तो नहीं बदलती... सुनाकर वाहवाही लूटी। इसके बाद डा. अब्बास रजा नय्यर ने लखनऊ की कैफियत को शब्दों में बयां किया। उनकी शेर-ओ-शायरी के केंद्र में भी लखनऊ रहा। ताल्लुकात निभाना मुझे भी आने लगा अब एक हाथ से तालियां बजाना मुझे भी आने लगा... के बाद- मैं दीया हूं मुझे बुझाएगी... ऐ हवा सांस फूल जाएगी। फिर- ये लखनऊ है यहां एक-दूसरे का सबको खयाल है... सुनाकर प्रशंसा बटोरी। अंत में डा. विनीत डेविड ने लखनऊ पर कविता सुनाकर सत्र का समापन किया।

एलयू से निकल जाते हैं पर एलयू दिल से निकलता नहीं...

पंकज प्रसून ने अपनी लोकप्रिय कविताओं को सुनाया। साथ ही वन लाइनर से भी सबको हंसाया। एलयू से निकल जाते हैं पर एलयू दिल से निकलता नहीं... फरमाया तो विद्यार्थी ही नहीं, शिक्षक भी ठहाके लगाने लगे। लखनऊ के कुछ नाम बदलने का सुझाव दिया- टेढ़ी पुलिया का नाम जिग जैग ब्रिज कर देना चाहिए। बंदरियाबाग गार्डन आफ फीमेल मंकी और हुसड़िया को द लाफिंग स्क्वायर बना दिया जाए... सुनकर लोग हंसी रोक न सके। लंगूर भगाने के लिए सारे बंदर एक हो गए... पंक्ति से व्यंग्य किया। एक लड़का एक लड़की के पीछे हाथ धोकर पड़ गया। लड़की को अपना मुंह धोकर दिखाना पड़ा तब मामला शांत हुआ... जैसी पंक्तियों से देर तक हंसाया।

i-NEXT PAGE 5

दर्द जब बढ़ जाता है तो कविता लिखी जाती है

मॉडरेटर रानू उनियाल वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री विद्याविंदु सिंह से मुखातिब

LUCKNOW: इस सत्र में मॉडरेटर रानू उनियाल सर्वप्रथम वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री विद्याविंदु सिंह से मुखातिब हुई। अवधी में उनकी लेखन यात्रा को जानने के साथ लोक गीत गुनगुनाने का आग्रह किया तो विद्या विंदु ने कथा हम गाई सिया रघुराई... सुनाया। फिर मुक्ति शीर्षक की अपनी रचना को साझा किया- बरगद की जटाओं में उलझती रही नन्ही चिड़िया ने पूछा मैं उड़ान भरूं... विद्या ने कहा, कभी-कभी जो हम कहना चाहते हैं, वह कह नहीं पाते या कुछ और कह जाते हैं, वह भी अभिव्यक्ति है। दर्द जब बढ़ता है तो कविता लिखी जाती है। उन्होंने अभिव्यक्ति की इस बेचैनी को कविता- दुख रुकता है द्वार पर ज्यों बरगद की छांव.. सुनाकर बयां किया। इस रचना को तालियों का साथ मिला और रानू उनियाल एपी पांडेय की ओर मुड़ीं। पांडेय ने हाइकू - चलती नाव कोहरा ओढ़े नदी अदृश्य छोर प्रस्तुत की। मछुआरे ने लो फेंक दिया जाल सहमा ताल- सुनाकर प्रशंसा बटोरी। फिर- तुमसे अच्छी तुम्हारी तस्वीर कम से कम रंग तो नहीं बदलती... सुनाकर वाहवाही लूटी।

एलयू हमारे दिल से निकलता नहीं...

पंकज प्रसून ने अपनी लोकप्रिय कविताओं को सुनाया। साथ ही वन लाइनर से भी सबको हंसाया। एलयू से निकल जाते हैं पर एलयू दिल से निकलता नहीं... फरमाया तो विद्यार्थी ही नहीं, शिक्षक भी ठहाके लगाने लगे। लखनऊ के कुछ नाम बदलने का सुझाव दिया- टेढ़ी पुलिया का नाम जिग जैग ब्रिज कर देना चाहिए। बंदरियाबाग गार्डन आफ फीमेल मंकी और हुसड़िया को द लाफिंग स्क्वायर बना दिया जाए... सुनकर लोग हंसी रोक न सके। लंगूर भगाने के लिए सारे बंदर एक हो गए... पंक्ति से व्यंग्य किया। एक लड़का एक लड़की के पीछे हाथ धोकर पड़ गया। लड़की को अपना मुंह धोकर दिखाना पड़ा तब मामला शांत हुआ... जैसी पंक्तियों से देर तक हंसाया।

स्टूडेंट्स ने दिखा गजब का उत्साह.

एलयू के साहित्य उत्सव में दूसरे दिन भी हुआ कई कार्यक्रमों का आयोजन

ये महफिलों का दौर चलता रहे...

लखनऊ विश्वविद्यालय में साहित्य उत्सव में कई विषयों पर हुई चर्चा

LUCKNOW (17 MARCH): दम घोंटू वातावरण में आक्सीजन का भी काम करता है व्यंग्य। यूं कहें तो जनभावनाओं की हसरतों को मापने का थर्मामीटर भी है व्यंग्य। रविवार को आथर स्पीक पर शुरू हुई बात व्यंग्य लेखन से लेकर इसकी चुनौतियों, शर्तों और भविष्य की योजनाओं तक गई।

अलंकार रस्तोगी से संवाद

लखनऊ विश्वविद्यालय के टैगोर लाइब्रेरी के तत्वावधान में मालवीय सभागार में आयोजित साहित्य उत्सव में मॉडरेटर प्रो. अल्का पांडेय ने व्यंग्यकार अलंकार रस्तोगी से प्रश्न किया कि आप अंग्रेजी के शिक्षक हैं और व्यंग्य हिंदी में क्यों लिखते हैं? रस्तोगी बोले, अंग्रेजी उच्च वर्ग की भाषा है। यह विसंगतियों से परे है। वंचित वर्ग की भाषा हिंदी है, इसलिए व्यंग्य उसी की भाषा में लिखता हूं, व्यंग्य अपनी शर्तों पर जी रहा है। इस पर रस्तोगी ने कहा, किसी विसंगति पर प्रहार करता हूं या उसकी तह में जाता हूं तो उसके जन्मदाता को पीड़ा होना स्वाभाविक है। व्यंग्य अपनी गिरेबान में झांकने का अवसर देता है। उन्होंने कहा कि गर खुदा मुझसे कहे कुछ मांग ऐ बंदे मेरे, मैं तो बस इतना कहूं महफिलों का दौर ये चलता रहे...

स्वयं को सशक्त बनाएं महिलाएं

मॉडरेटर प्रो. फातिमा रिजवी के साथ संवाद में लेखिका सत्या सरन ने हर महिला को सशक्त बनने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि महिलाएं चुनौतियों को स्वीकारें और स्वयं को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाएं। सरन ने कहा कि वर्षों से कोई यह कहता या करता आया है... जैसी धारणा को महिलाएं न पालें। यहां की चीजें वहां डाल दें, यह नहीं करना चाहिए, मतलब कट-पेस्ट कल्चर को बढ़ावा न दें। उन्होंने कहा कि किसी बात चार लाइन में खत्म किया जा सकता है, लेकिन उसे मनोरंजक बनाने के लिए उसके पीछे जाना होता है। बहुत तरह की बातें जोड़नी पड़ती हैं, फिर उसमें रोचकता आती है। लेकिन, बायोग्राफी से होते हुए वर्चा अनुवाद तक पहुंची। सत्या ने कहा कि गुलजार साहब की कृति का ट्रांसलेशन बिलकुल होता है।

लखनवी पकवानों के कतरे-कतरे में नजाकत-नफासत

नजाकत-नफासत केवल लखनऊ और लखनवियों की रूह में नहीं है, ये यहां के पकवानों में भी घुली है। बिलकुल 'पहले आप' की संस्कृति की तरह. देश हों या नवरोज व्यंजन, इसके कतरे-कतरे में स्वाद है. देश के हों या विदेशी, जिसने खाया वही इसका दीवाना बन गया. बिरयानी हो या कबाब, जायका लाजवाब होता है. रविवार को लखनऊ विश्वविद्यालय में 'जायका-ए-लखनऊ: लखनऊ की पाक परंपरा' पर हुई चर्चा जायकेदार रही. प्राचीन काल से लेकर ब्रिटिश एवं मुगल कालीन खाने पर भी वक्ताओं ने स्वादिष्ट बातें की. मालवीय सभागार में आयोजित साहित्य उत्सव के इस सत्र में मॉडरेटर प्रो. राकेश चंद्रा ने कहा कि जो भी यहां आता है, खाने का मुरीद बनकर जाता है. ऐसा क्या खास है यहां के खाने में।

JAGRAN CITY PAGE III

लखनवी पकवानों के कतरे-कतरे में नफासत

लवि के लिटरेचर फेस्टिवल में लखनऊ की पाक परंपरा पर जायकेदार चर्चा

जासं, लखनऊ : नजाकत-नफासत केवल लखनवियों की रूह में नहीं, ये यहां के पकवानों में भी घुली है। यहां के पकवानों के कतरे-कतरे में स्वाद है। बिरयानी हो या कबाब, जायका लाजवाब होता है। लखनऊ विश्वविद्यालय में "जायका-ए-लखनऊ : लखनऊ की पाक परंपरा" पर हुई चर्चा जायकेदार रही।

मालवीय सभागार में आयोजित साहित्य उत्सव के इस सत्र में मॉडरेटर प्रो. राकेश चंद्रा ने कहा कि जो भी यहां आता है, खाने का मुरीद बनकर जाता है। ऐसा क्या खास है यहां के खाने में? डा. नूर खान ने कहा कि लखनऊ के घरों का खाना लजीज होता है। यहां के खाने का रंग ही नहीं खुशबू भी आकर्षित करती है। खाने में अगर किसी चीज का एक कतरा डालना है तो उतना ही डाला जाता है। स्वाद तभी आता है। यहां केवल सलीके से खाना बनाया नहीं जाता, पेश भी किया जाता है। उन्होंने अमरूद, कैथा और हरे लहसुन की चटनी पर चर्चा की तो कई के मुंह में पानी आ गया। डा. राज कुमार सक्सेना ने लखनऊ से पहले अवध और फैजाबाद के खाने पर बात की। कहा, वास्तविक अवध फैजाबाद (अयोध्या) है। वहां पहले सूर्यवंशी हुआ करते थे। वे शाकाहारी थे। वक्त के साथ खाने के तरीके बदले। मुगल जब फैजाबाद से लखनऊ आए, तब यहां 'दम लगाना', अधिक घी मिलाना, मोयन और इत्र का उपयोग होने लगा। पहले लोग जमीन पर बैठकर खाते थे। ब्रिटिश काल में मेज पर खाने की परंपरा शुरू हुई।

मसाले में अधिक खाते हैं मारवाड़ी : मारवाड़ी खाने पर बात उठी तो रश्मि वैद ने राजस्थान से लेकर यहां तक का अनुभव साझा किया। कहा, मारवाड़ी दाल-चूरमा मिलाकर खाते हैं। मारवाड़ी शाकाहारी होते हैं। वे दूध, दही, घी का उपयोग अधिक करते हैं। मसाले भी अधिक खाते हैं। त्योहार में तो बिना लहसुन-प्याज का खाना बनाते हैं।

सत्र जायका-ए-लखनऊ में चर्चा करतीं रश्मि वैद साथ में डा. नूर खान, प्रो. राकेश चंद्रा व डा. राजकुमार सक्सेना • जागरण

चुनौतियां को स्वीकार करें, स्वयं को सशक्त बनाएं महिलाएं

जासं, लखनऊ : एक महिला जीवन की मुश्किलों का सामना किस तरह करती है, आथर स्पीक के दूसरे सत्र में इस पर बात हुई। मॉडरेटर प्रो. फातिमा रिजवी के साथ संवाद में लेखिका सत्या सरन ने हर महिला को सशक्त बनने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि महिलाएं चुनौतियों को स्वीकारें और स्वयं को मजबूत बनाएं।

साहित्य उत्सव में सरन ने कहा कि वर्षों से कोई यह कहता या करता आया है... जैसी धारणा को महिलाएं न पालें। लेखन जाना होता है। अनुवाद पर सत्या ने कहा कि गुलजार साहब की कृति का ट्रांसलेशन बिलकुल होता है। किसी वाक्य का अनुवाद आसान होता है, लेकिन किसी लेखक को ट्रांसलेट करना आसान नहीं होता।

सत्र आथर स्पीक में चर्चा करतीं सत्या सरन, साथ में प्रो. फातिमा रिजवी • जागरण

जनभावनाओं की हसरतों को मापने का थर्मामीटर है व्यंग्य

सत्र आथर स्पीक में चर्चा करते अलंकार रस्तोगी साथ में प्रो. अल्का पांडेय • जागरण

जासं, लखनऊ : व्यंग्य में एक चुभन होती है, जो शब्दों से दूसरों को कचोट कर छोड़ देता है। कसक भी पैदा करता है। दम घोंटू वातावरण में आक्सीजन का भी काम करता है व्यंग्य। यूं कहें तो जनभावनाओं की हसरतों को मापने का थर्मामीटर भी है व्यंग्य। रविवार को 'आथर स्पीक' पर शुरू हुई बात व्यंग्य लेखन से लेकर इसकी चुनौतियों, शर्तों और भविष्य की योजनाओं तक गई। चर्चा में व्यंग्य की स्वस्थ रहने की पूंजी तक बताया गया।

मालवीय सभागार में आयोजित साहित्य उत्सव में मॉडरेटर प्रो. अल्का पांडेय ने व्यंग्यकार अलंकार रस्तोगी से संवाद किया। उन्होंने प्रश्न किया- आप अंग्रेजी के शिक्षक हैं और व्यंग्य हिंदी में क्यों लिखते हैं? रस्तोगी बोले- अंग्रेजी उच्च वर्ग की भाषा है। यह विसंगतियों से परे है। वंचित वर्ग की भाषा हिंदी है। इसलिए, व्यंग्य उसी की भाषा में लिखता हूं। व्यंग्य अपनी शर्तों पर जी रहा है? इस पर रस्तोगी ने कहा, किसी विसंगति पर प्रहार करता हूं या उसकी तह में जाता हूं तो उसके जन्मदाता को पीड़ा होना स्वाभाविक है। व्यंग्य अपनी गिरेबान में झांकने का अवसर देता है। आज-कल के लेखक व्यंग्य के नाम पर कुछ भी लिख देते हैं, ऐसा नहीं करना चाहिए। व्यंग्य व्यक्तिगत अनुभव से लिखे जाते हैं। यह बरैया या ततैया के डंक की तरह होते हैं। इन्हें उसी भाव में व्यक्त किया जाना चाहिए। भविष्य की योजना क्या है? अलंकार ने कहा कि व्यंग्य की नई कृति टेढ़ी चाल की रचना कर रहा हूं। सारगर्भित चर्चा में अलंकार ने अपनी बात को इन पंक्तियों से समाप्त की-

गर खुदा मुझसे कहे कुछ मांग ऐ बंदे मेरे। मैं तो बस इतना कहूं महफिलों का दौर ये चलता रहे।।

जिंदगी से जूझकर जिंदगी की राह पर चलना कोई मीना से सीखे

लखनऊ विश्वविद्यालय में लिटरेचर फेस्टिवल के तहत तरंग क्लासिकल नोट्स टाइमलेस इमोशन और मीना कुमारी में प्रस्तुति देतीं वसुंधरा शुक्ला • जागरण

जासं, लखनऊ : 'चांदनी रात बड़ी देर के बाद आई है, ये मुलाकात बड़ी देर के बाद आई है। ...' ट्रेजडी क्वीन, महजबीन बानो कहिए, या मीना कुमारी नाज। साल 1933 में जन्मीं महजबीन एक फिल्मी घराने से थीं। हम सभी उन्हें 'पाकीजा', 'साहिब बीबी और गुलाम' जैसी फिल्मों के लिए आज भी याद करते हैं। आठ साल की उम्र से फिल्मी पर्दे पर कदम रखने वाली नाज के लिए, 1952 में 'बैजू बावरा' फिल्म शोहरत का पहला कदम था। उनके गीत और गजल जिंदगी से जूझकर जिंदगी की राह पर चलना सिखाते हैं। लखनऊ लिटरेचर फेस्ट में रविवार की शाम मालवीय सभागार में 'मीना कुमारी एक मुख्तसर दास्तान' में हर्षवर्धन ने मीना कुमारी के गजलों और उनके जीवन के कुछ पहलुओं को छुआ। वहीं वसुंधरा शुक्ला ने उनके गीतों पर नृत्य कर दास्तान को आगे बढ़ाया।

संतूर, तबले और पखावज की प्रस्तुति

तरंग क्लासिकल नोट्स टाइमलेस इमोशन में पंडित दिशारी चक्रवर्ती ने संतूर, सुमित मलिक ने तबले और स्वामी श्री रामदेशानंद ने पखावज पर प्रस्तुति दी।

PIONEER PAGE 3, 4

लखनऊ विश्वविद्यालय के 44 छात्रों ने किया गेट-2024 क्वॉलीफाई

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 44 छात्रों ने गेट-2024 क्वॉलीफाई किया है। जिसमें 32 इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, 6 जूलॉजी, 3 वनस्पति विज्ञान, 2 मनोविज्ञान और 1 सांख्यिकी विभाग के छात्रों ने इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पास किया। छात्रों का यह प्रदर्शन, विश्वविद्यालय के अनुकूल शिक्षा वातावरण को प्रदर्शित करता है। गेट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र (अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्ज्वल उपाध्याय, पूजा रंजन) इलेक्ट्रॉनिक विभाग के छात्र (आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक कुमार पटेल, प्रज्ञा प्रकाश), इलेक्ट्रिकल विभाग के (गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा) एवं मैकेनिकल विभाग के छात्र कुशाग्र वर्धन एवं सिविल विभाग के छात्र (हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार) सम्मिलित है। साथ ही साइकोलॉजी की दो छात्राओं भावना गुप्ता एवं अर्चना यादव, स्टेटस्टिक्स से एक छात्र संपूर्णानंद गुप्ता व अन्य छात्रों ने गेट-2024 की परीक्षा क्वालीफाई की। चयनित छात्रों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बधाई दी है।

ग्रामीण भारत में अनाज की खपत में 78 फीसद की आई गिरावट

● भारत लैब ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2022-23 से प्राप्त जानकारी को किया जारी

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

ट्रांसपोर्टेशन की सरलता के चलते ग्रामीण भारत में अनाज की खपत में 78 फीसद की गिरावट दर्ज की गयी है। साथ ही फलों (ताजे और सूखे दोनों) और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों पर खर्च में वृद्धि दर्ज की गयी है। यह रिपोर्ट लखनऊ विश्वविद्यालय और रेडियफ्यूजन के बीच हुए एमओयू के तहत भारत लैब ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) 2022-23 से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों के आधार पर जारी किया है।

सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा आयोजित (एचसीईएस) 2022-23, भारत के भीतर विकसित हो रहे उपभोग रुझानों पर प्रकाश डालता है। घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) 2022-23 ग्रामीण और शहरी भारत में उपभोग की आदतों में महत्वपूर्ण बदलावों को दर्शाता है। रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 1999-2000 में भारत के मासिक खाद्य व्यय में ताजे फलों का हिस्सा मात्र 1.42 फीसद था, जो 2022-23 में बढ़कर 2.54 फीसद हो गया, जो 78 फीसद की पर्याप्त वृद्धि को दर्शाता है। इसी अवधि में सूखे मेवों में 0.3 फीसद से 1.17 फीसद तक की और भी बड़ी वृद्धि देखी गई, जो लगभग 300 फीसद की वृद्धि है। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद, 1999-2000 और 2022-23 के बीच ईंधन और बिजली पर मासिक खर्च 7.52 फीसद से घटकर 6.66 फीसद हो गया है। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च 170 फीसद से अधिक बढ़ा है, जो मासिक व्यय का 2.62 फीसद से 6.89 फीसद हो गया है। रिपोर्ट के मुताबिक विकसित भारत की ओर एक और महत्वपूर्ण बदलाव पिछले दो दशकों में शिक्षा व्यय में दर्ज लगभग 70 फीसद वृद्धि द्वारा दर्शाया गया है, जो उच्च शिक्षा और कौशल उन्नयन पर ध्यान केंद्रित करता है। इसी तरह, रेस्तरां और मनोरंजन जैसी उपभोक्ता सेवाओं पर खर्च 2.98 फीसद से बढ़कर 5.08 फीसद हो गया है, जो ग्रामीण जीवन शैली में सेवा-उन्मुख उद्योगों के बढ़ते एकीकरण को दर्शाता है।

गोवा, उत्तराखण्ड और राजस्थान में मासिक व्यय ज्यादा

रिपोर्ट ग्रामीण भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में मासिक व्यय में भिन्नता को भी उजागर करती है। गोवा, उत्तराखंड और राजस्थान जैसे राज्य, जिनमें कृषि से परे मजबूत पर्यटन उद्योग हैं, उनका मासिक व्यय सबसे अधिक होता है। इसके विपरीत, तेलंगाना और हरियाणा जैसे राज्य अपने ग्रामीण क्षेत्रों में कम मासिक व्यय प्रदर्शित करते हैं। उत्तर प्रदेश के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एमपीसीई (मंथली पर कैपिटा एक्सपेंडिचर) 3,191 (भारत-3,773) और शहरी क्षेत्रों के लिए यह 5,040 (भारत-6,459) है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि हमें उत्तर प्रदेश में अंतर को समझने और अपने राज्य एमपीसीई को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। एक महत्वपूर्ण कारण अनौपचारिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने और इन लोगों की मासिक आय बढ़ाने के तरीकों और प्रथाओं को सुनिश्चित करने की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा, यह देखा गया है कि गैर-कृषि स्वरोजगार में लगे ग्रामीण परिवार अपने कृषि समकक्षों की तुलना में 4,159 का औसत मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (एमपीसीई) प्रदर्शित करते हैं, जो 3,702 है।

यह महत्वपूर्ण प्रयास भारत भर में उपभोग पैटर्न और व्यय आदतों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो उद्योगों, विपणक और उत्पाद नवप्रवर्तकों के लिए अमूल्य जानकारी प्रदान करता है।

प्रोफेसर आलोक कुमार राय
कुलपति, लखनऊ विवि

सिनर्जी 2024 में छात्र-छात्राओं ने दिखाई प्रतिभा, जीत दर्ज की

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज सिनर्जी 2024 के अंतर्गत रविवार से बीफार्म एवं डीफार्म की छात्र छात्राओं के मध्य क्रिकेट, वॉली बाल, एथेलेटिक्स के दो दिवसीय प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। पहले दिन की प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीया श्रेणी के विजेताओं का नाम घोषित किया गया।

क्रिकेट में डीफार्मा द्वितीय वर्ष के छात्रों ने टॉस जीतकर फील्डिंग करने का निर्णय लिया एवं डीफार्मा प्रथम वर्ष की टीम ने द्वितीय वर्ष की टीम को जीत के लिए 63 रन का लक्ष्य निर्धारित किया तथा 62 रन पर आल आउट करके जीत दर्ज किया। क्रिकेट का अगला मैच बीफार्मा द्वितीय वर्ष एवं बीफार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच हुआ जिसमें बीफार्मा प्रथम वर्ष ने जीत दर्ज की। डीफार्मा प्रथम वर्ष एवं बीफार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच क्रिकेट के फाइनल मैच का आयोजन किया गया। जिसमें बीफार्मा प्रथम वर्ष विजयी हुआ। वही महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में बीफार्मा एवं डीफार्मा के छात्राओं ने क्रिकेट में प्रतिभाग लिया। बीफार्म की छात्राओं ने 2 विकेट खोकर 51 रन बनाये तथा डीफार्म की छात्राओं ने जीत दर्ज की। पुरुष क्रिकेट में मैन ऑफ द सीरीज अवार्ड कुलदीप गोंड (बीफार्मा प्रथम वर्ष) को दिया गया एवं महिला क्रिकेट में मानसी खरवार (डीफार्मा द्वितीय वर्ष) को वुमन ऑफ द सीरीज अवार्ड दिया गया। बास्केट बॉल प्रतियोगिता में बीफार्मा तृतीय वर्ष के छात्र विजयी घोषित हुए। 100 मीटर रेस पुरुष वर्ग में अभिनय कुमार (बीफार्मा प्रथम वर्ष) प्रथम श्रेणी, आशीष कुमार मौर्य (बीफार्मा तृतीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी, एवं हरी ओम (डीफार्मा द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर रेस महिला वर्ग में शालिनी (डीफार्मा प्रथम वर्ष) प्रथम श्रेणी, पल्लवी (डीफार्मा द्वितीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी एवं गोल्डी (डीफार्मा द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर रेस फैकल्टी प्रशांत कुमार सिंह प्रथम श्रेणी, डॉ अभिषेक कुमार द्वितीय श्रेणी, प्रो पुष्पेंद्र कुमार त्रिपाठी (निदेशक) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर रेस पुरुष वर्ग में अनुशील (बीफार्म द्वितीय वर्ष) प्रथम श्रेणी, राम किशोर (डीफार्म प्रथम वर्ष) द्वितीय श्रेणी, आशीष कुमार मौर्य (बीफार्म तृतीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। शार्ट पुट बॉयज प्रतियोगिता में विकास (बीफार्म तृतीय वर्ष) प्रथम श्रेणी, सनी सिंह (डीफार्म द्वितीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी, एवं रितेश (बीफार्म तृतीय वर्ष) तृतीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। जबकि शार्ट पुट गर्ल्स प्रतियोगिता में रुचि (डीफार्म द्वितीय वर्ष) प्रथम श्रेणी, शालिनी (डीफार्म प्रथम वर्ष) द्वितीय श्रेणी, एवं दीपांजलि (बीफार्म प्रथम वर्ष) तृतीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। शार्ट पुट फैकल्टी पुरुष वर्ग प्रशांत कुमार सिंह प्रथम श्रेणी, डॉ अभिषेक कुमार द्वितीय श्रेणी,एवं सौरभ शुक्ला ने तृतीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। शार्ट पुट फैकल्टी महिला वर्ग में डॉ सौम्या सिंह, प्रथम श्रेणी, डॉ लुबना आजमी द्वितीय श्रेणी एवं शिल्पा ने तृतीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। लॉन्ग जम्प महिला वर्ग की प्रतियोगिता में शगुन (डीफार्म द्वितीय वर्ष) प्रथम श्रेणी, अमृता (बीफार्म प्रथम वर्ष) द्वितीय श्रेणी एवं रुचि (डीफार्म द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी तथा लॉन्ग जम्प पुरुष वर्ग प्रतियोगिता में अनिकेश (बीफार्म द्वितीय वर्ष) प्रथम श्रेणी, हरी ओम (डीफार्म द्वितीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी तथा गौरव (डीफार्म द्वितीय वर्ष) तृतीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। टग ऑफ़ वॉर महिला वर्ग में बीफार्म तृतीय वर्ष ने प्रथम तथा डी फार्म द्वितीय वर्ष ने द्वितीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया जबकि टग ऑफ़ वॉर पुरुष वर्ग में डीफार्म द्वितीय वर्ष ने प्रथम एवं बीफार्म द्वितीय वर्ष ने द्वितीय श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। खो खो गर्ल्स प्रतियोगिता में बीफार्म प्रथम वर्ष एवं बीफार्म तृतीय वर्ष ने संयुक्त रूप से प्रथम श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। बॉलीबॉल प्रतियोगिता पुरुष के प्रथम मैच में बीफार्म प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों ने प्रतिभाग किया जिसमें बीफार्म द्वितीय वर्ष के छात्रों ने जीत दर्ज किया। इस प्रतियोगिता का द्वितीय मैच बीफार्म एवं डीफार्म के छात्रों के मध्य खेला गया जिसमे डीफार्म ने जीत प्राप्त किया। बॉलीबॉल प्रतियोगिता महिला वर्ग बीफार्म और डीफार्म की छात्राओं के बीच हुआ जिसमे बीफार्म की छात्राओं को विजेता घोषित किया गया। प्रतियोगिताओं में प्रो पुष्पेंद्र कुमार त्रिपाठी (निदेशक) एवं फैकल्टी मेंबर्स उपस्थित रहे। डॉ रोहित सिंह, डॉ सौम्या सिंह, डॉ प्रणेश कुमार, डॉ अभिषेक कुमार, प्रशांत कुमार, मो सईदुर्रहमान एवं सौरभ शुक्ल ने प्रतियोगिताओं को कोआर्डिनेट किया।

अनाज की खपत गिरी, मनोरंजन में बढ़ा खर्च

जासं, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय और भारत लैब ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2022-23 से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों की रिपोर्ट रविवार शाम को जारी की। इसके तहत 2022-23 में ग्रामीण और शहरी भारत में उपभोग की आदतों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए थे। ग्रामीण भारत में अनाज की खपत में 78 प्रतिशत की महत्वपूर्ण गिरावट के साथ-साथ फलों और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों पर खर्च में वृद्धि के रूप में चिह्नित हो गया है। वहीं, पिछले दो दशकों में शिक्षा व्यय में दर्ज लगभग 70 प्रतिशत वृद्धि द्वारा दर्शाया गया है, जो उच्च शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है।

विश्वविद्यालय के कुलपति आलोक कुमार राय ने बताया कि सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय की ओर से हुआ सर्वेक्षण भारत के भीतर विकसित हो रहे उपभोग रुझानों पर प्रकाश डालता है। घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2022-23 ग्रामीण और शहरी भारत में उपभोग की आदतों में महत्वपूर्ण बदलावों को दर्शाता है।

31 तक भरे जाएंगे सम सेमेस्टर परीक्षा फार्म

नेशनल पीजी कालेज ने आदेश के अनुसार में शुरू होने वाली स्नातक व परास्नातक सम सेमेस्टर परीक्षाओं के लिए फार्म भरने के लिए गाइडलाइन जारी कर दी है। छात्र-छात्राओं को 31 मार्च तक वेबसाइट https://npgc.in/ के माध्यम से अनिवार्य रूप से फार्म भरना होगा। स्नातक दूसरे, चौथे, छठे व परास्नातक में दूसरे व चौथे सेमेस्टर के छात्र-

छात्रों को परीक्षा फार्म भरने संबंधी निर्देश जारी किए गए हैं। फार्म भरने के बाद विद्यार्थी के पास एक पुष्टिकरण ई-मेल भेजा जाएगा।

23 साल में दिखा बदलाव : वर्ष 1999-2000 में भारत के मासिक खाद्य व्यय में ताजे फलों का हिस्सा मात्र 1.42 प्रतिशत जो 2022-23 में बढ़कर 2.54 प्रतिशत हो गया। इसी अवधि में सूखे मेवों में 0.3 प्रतिशत से 1.17 प्रतिशत तक की बड़ी वृद्धि भी देखी गई। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद 1999-2000 और 2022-23 के बीच ईंधन और बिजली पर मासिक खर्च 7.52 प्रतिशत से घटकर 6.66 प्रतिशत हो गया है। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च 170 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है, जो मासिक व्यय का 2.62 प्रतिशत से 6.89 प्रतिशत हो गया है।

मनोरंजन में भी बढ़ा खर्च : दो दशकों में रेस्टोरेंट और मनोरंजन जैसी उपभोक्ता सेवाओं पर खर्च 2.98 प्रतिशत से बढ़कर 5.08 प्रतिशत हो गया है, जो ग्रामीण जीवन शैली में सेवा-उन्मुख उद्योगों के बढ़ते एकीकरण को दर्शाता है। उत्तर प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के लिए, मासिक प्रति व्यक्ति उपभोक्ता व्यय (एमपीसीई) 3,191 (भारत 3,773) और शहरी क्षेत्रों के लिए यह 5,040 (भारत 6,459) है। इसलिए हमें उत्तर प्रदेश में अंतर को समझने और अपने राज्य एमपीसीई को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

49 विद्यार्थियों को गेट-2024 में सफलता

जासं, लखनऊ : लविवि के 49 छात्र-छात्राओं ने ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग (गेट)-2024 में सफलता हासिल की है। इनमें 32 विद्यार्थी इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, जूलाजी से छह, भौतिक विज्ञान से पांच, वनस्पति विज्ञान से तीन, मनोविज्ञान से दो और सांख्यिकी विभाग से एक विद्यार्थी शामिल हैं। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने सभी को बधाई दी।

विश्वविद्यालय के प्रवक्ता प्रोफेसर दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि गेट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने वालों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्ज्वल उपाध्याय, पूजा रंजन, इलेक्ट्रॉनिक विभाग के आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक कुमार पटेल, प्रज्ञा प्रकाश शामिल हैं। इसी तरह इलेक्ट्रिकल विभाग के गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा, मैकेनिकल विभाग के कुशाग्र वर्धन, सिविल विभाग के हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार शामिल हैं। साइकोलॉजी की भावना गुप्ता, अर्चना यादव, सांख्यिकी से संपूर्णानंद गुप्ता सहित अन्य छात्र शामिल हैं।

केएमसी के तीन छात्र सफल

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग से तीन छात्रों ने गेट (ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट इन इंजीनियरिंग) में सफलता हासिल की है। बीटेक अंतिम वर्ष के छात्र अतुल यादव, शिव कुमार चौधरी, मिंटू सिंह ने यह सफलता हासिल की है। अतुल की आल इंडिया रैंक 1332वीं है। इस परीक्षा से छात्र आइआइटी, एनआइटी के एमटेक या पीएचडी में सीधे प्रवेश ले सकेंगे। इसके अलावा एनटीपीसी, इंडियन आयल, एनएचएआइ आदि पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग में नौकरी भी पाने का मौका मिल सकता है। कुलपति प्रो. एनबी सिंह ने छात्रों को बधाई दी।

फेस्टिवल में कविता पाठ करतीं छात्रा गार्गी चतुर्वेदी, छात्रा संध्या • जागरण

THE PIONEER PAGE 3

LU Literature Festival: 'Nafasat' makes Lko cuisine different

SHARMILA KRISHNA
LUCKNOW

The 'nafasat' (refinement) of Lucknow's cuisine was highlighted on the second day of Lucknow University Literature Festival at Lucknow University on Sunday.

The panel included Noor Khan, a former teacher; Rashmi Vaid, an entrepreneur; and Raj Kumar Saxena, representing the hospitality industry, with Prof Rakesh Chandra from LU moderating the session.

Noor Khan, focusing on the food in Muslim households, emphasised the intricacies that define 'Lakhnavi' cooking. She explained that 'nafasat' encompasses the refined aspects of Lucknow's culture, including its poetry, craftsmanship, literature, and cuisine.

According to her, while Lucknow's street food, particularly its kebabs, often garners attention, the true culinary treasures lie within home-cooked meals. She described how certain unwritten rules, passed down through generations, elevate dishes to a refined level of perfection.

"For instance, a simple mutton qorma transforms into a 'nafis' (refined) dish when prepared with thinly sliced, evenly browned onions and perfectly cooked condiments, resulting in a smooth and silky texture," she explained.

Additionally, she discussed the importance of using 'potlis' to infuse strong flavours into dishes like 'yakhni pulao' or 'nihari' and incorporating seasonal vegetables into meat-based dishes, such as using bottle gourd during the onset of summer.

Khan also emphasised the significance of maintaining a quiet kitchen ambiance and cutting vegetables evenly to preserve their natural flavours.

She expressed her preference for celebrating the unique charm and flavours of vegetables, rather than comparing them to meat dishes.

Furthermore, Khan highlighted the use of fragrant ingredients like 'kevra' and 'zafran' (saffron) to enhance the aroma of meat dishes, cautioning against excessive use. She criticised the generic use of 'garam masala' in recipes and noted the absence of tomatoes in traditional Lucknow's cuisine, replaced instead by the sweetness of onions and the tanginess of yogurt.

Regarding presentation, Noor Khan stressed the importance of garnishing dishes appropriately and using silver 'varq' for aesthetic enhancement. She recounted an experience where a mutton dish adorned with golden and silver leaves, known as 'kundan qaliy', showcased the meticulous attention to presentation in Lucknow's cuisine.

Furthermore, Noor Khan mentioned the influence of neighboring kasba food on Lucknow's culinary landscape, citing dishes like moong dumplings in salan and various chutneys.

Prof Rakesh Chandra raised the issue of gender bias in food served in Lucknow. "I had gone to Kashmir where I was told that the best piece of mutton was served to the girls but this does not happen in Lucknow," he said. He further said that one of the stories of the nawabs was that they were so lazy that they did not want to chew and hence the melt-in-mouth kebabs were made.

Raj Kumar Saxena from the hospitality industry said unlike other countries, things went in different ways as far as Awadh was concerned. "In Japan and France there was only one regime wherein the food got more refined. This did not happen in Awadh. In Awadh, there was vegetarian food earlier which was followed by the Mughlai food, but the cuisine reached its zenith in the last two to three nawabs of Lucknow, including Wajid Ali Shah. It was the finest cuisine and the comparisons were made with Delhi cuisine. It was the golden period for art, craft and culture," he added.

Meanwhile, in a session called 'Authors Talk', Alankar Rastogi talked about the purpose of satire, saying the idea is to bring out real issues of society in the public sphere with criticism because it provides fresh oxygen to life and society. Writer and social activist Sathya Saran talked about inferences of Guru Dutt, Jagjeet Singh, Hariprasad Chaurasia and fashion & fusion of Indo-Western culture.

In another session moderated by Prof Ranu Uniyal from the department of English, the poets of the session were Vidya Vindu Singh, AP Pandey, Pankaj Prasoon and Dr Abbas Raza Nayyar.

Pankaj Prasoon, a famous poet known for his satire and contemporary writings, enthralled the audience with his recitation of satirical poems with an intense sense of reformation. Dr Nayyar mesmerised the gathering with his talk on the culture of Lucknow which covered traditional as well as modern aspects of Lucknow.

RAHSTRIAYA SAHARA PAGE 6

लविवि के साहित्यिक महोत्सव में कथक नृत्य प्रस्तुत करती हर्षप्रिया शुक्ला।

लविवि के 49 छात्रों ने गेट 2024 किया क्वालीफाई

लखनऊ (एसएनबी)। लखनऊ विश्वविद्यालय के 49 छात्रों, जिसमें 32 इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, 06 जूलॉजी, 03 वनस्पति विज्ञान, 02 मनोविज्ञान और 01 सांख्यिकी विभाग और फिजिक्स के पांच छात्रों ने गेट-2024 परीक्षा को सफलतापूर्वक पास किया। छात्रों का यह प्रदर्शन, विश्वविद्यालय के अनुकूल शिक्षा वातावरण को प्रदर्शित करता है। गेट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र (अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्ज्वल उपाध्याय, पूजा रंजन) इलेक्ट्रॉनिक विभाग के छात्र (आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक कुमार पटेल, प्रज्ञा प्रकाश), इलेक्ट्रिकल विभाग के (गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा) एवं मैकेनिकल विभाग के छात्र कुशाग्र वर्धन एवं सिविल विभाग के छात्र (हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार) सम्मिलित हैं। साथ ही साइकोलॉजी की दो छात्राओं भावना गुप्ता एवं अर्चना यादव, स्टेटस्टिक्स से एक छात्र संपूर्णानंद गुप्ता व अन्य छात्रों ने गेट-2024 की परीक्षा क्वालीफाई की। चयनित छात्रों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया।

AMRIT VICHAR PAGE 4

मुस्लिम कवियों ने भजन लिखा तो नौहे मोहर्रम की जान रहे छन्नूलाल

लखनऊ विश्वविद्यालय साहित्योत्सव 2024 : गंगा-जमुनी तहजीब का शानदार उदाहरण रहा है नफासत का शहर लखनऊ

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

लखनऊ विश्वविद्यालय के मालवीय सभागार में आयोजित लिटरेचर फेस्टिवल में ऑथर स्पीक पर चर्चा में बोलतीं पद्मश्री विद्या विंदु सिंह, साथ में पंकज प्रसून, रेनू उनियाल। अमृत विचार

लिटरेचर फेस्टिवल के दौरान प्रस्तुति देते प्रतिभागी। अमृत विचार

अमृत विचार : गोमती नदी के किनारे बसा नफासत का शहर लखनऊ हकीकत में गंगा-जमुनी तहजीब का शानदार उदाहरण है। शायरी की ही करामत रही कि पं. दयाशंकर को नसीम, आनंद नारायण को मुल्ला, पं. ब्रजनारायण को चकबस्त के रूप में प्रसिद्धि दी। इस शहर में हिंदू महारानियों ने मस्जिद तो मुस्लिम बेगमों ने मंदिर का निर्माण कराया। मुस्लिम लेखक और कवियों ने भजन लिखे और गाए। वहीं छन्नूलाल दलगीर के नौहे मोहर्रम की जान रहे। ये जानकारी लविवि के उर्दू विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष और शायर प्रो. अब्बास रजा नैयर ने रविवार को परिसर में चल रहे साहित्योत्सव में विद्यार्थियों को दी।

विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय साहित्योत्सव का दूसरा दिन कविता, कहानी, नाटक और खानपान की शानदार प्रस्तुतियों के नाम रहा। म्यूजिंग इन वर्स नाम के सत्र में लखनऊ की शायरी के साथ ही व्यंग्य, कविता और पद्य की विभिन्न विधाओं पर चर्चा हुई। प्रो. नैयर ने बताया कि लखनऊ ही विश्व का एकमात्र शहर है जहां शायरी में अखबार निकलता रहा। द्वारिका प्रसाद ने खुद रिपोर्टिंग करते थे तथा खबर को शायरी के रूप में पेश करते थे। एक-दो महीने नहीं बल्कि 11 साल तक यह सिलसिला चलता रहा। इसके बाद विश्वेश्वर प्रसाद मुनव्वर ने यह परंपरा आगे बढ़ाई। इस सत्र का मॉडरेशन प्रो. रानू उनियाल ने किया। कार्यक्रम का आयोजन लखनऊ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग की ओर से किया गया। प्रो. मैत्रेयी प्रियदर्शिनी, प्रो. निशि पांडेय और डॉ. विनीत एम डेविड ने इसके आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई।

श्रोता ही लेखक व कवि की असली पहचान

पंकज प्रसून ने कहा कि उनको बहुत सारे पुरस्कार मिले है। पर हकीकत यह है कि किसी भी लेखक और कवि के लिए सिर्फ परिचय बताने के लिए होते है। उसका असली परिचय जब उसकी दो लाइन पाठक और श्रोताओं के बीच रह जाती है, तभी होता है। पद्मश्री विद्या विंदु सिंह ने कहा कि बचपन में अंत्याक्षरी खेलते थे। जिस शब्द से कविता नहीं आती थी, तो अपने आप बनाकर कह देते थे। खेल के हिसाब से यह बेईमानी थी, पर इससे कविता लिखने की प्रेरणा मिली। एपी पांडेय ने कहा कि कविता की कोई सीमा नहीं होती है। इसीलिए उन्होंने अंग्रेजी भाषा में गजल लिखी है। इस सत्र में कविता, शायरी, व्यंग्य ने मौजूद लोगों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया।

व्यंग्य विधा से युवाओं के अलगाव पर हुई चर्चा

साहित्योत्सव के दूसरे दिन का शुभारंभ प्रो. अल्का पांडेय और समकालीन लेखक अलंकार रस्तोगी की बातचीत के साथ हुआ। इसमें व्यंग्य विधा के लेखन के साथ ही युवा पीढ़ी का व्यंग्य विधा से बढ़ रहे अलगाव के कारणों पर चर्चा की गई। इसी तरह प्रोफेसर फातिमा रिजवी ने लेखिका सत्या सरन के साथ बातचीत की। सत्या सरन ने महिलाओं का समाज में उत्कर्ष और खुद एक महिला के तौर पर महिलाओं के जीवन में आने वाली चुनौतियों का अवलोकन कर खुद को सशक्त करने का संदेश दिया। समापन के बाद लुबना सलीम और सलीम आरिफ को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

गेट 2024 में चमके लविवि के 49 छात्र

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : ग्रेजुएट एप्टीट्यूड टेस्ट (गेट 2024) के परिणाम में लखनऊ विश्वविद्यालय के 44 छात्रों ने सफलता हासिल की है। भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु की ओर से जारी हुए परिणाम का पूरा विवरण आधिकारिक वेबसाइट गेट2024.iisc.acपर अपलोड किया गया है। वहीं लखनऊ विश्वविद्यालय में जो छात्र सफल हुए हैं उनके बारे में विश्वविद्यालय के प्रवक्ता डॉ दुर्गेश श्रीवास्तव ने बताया कि 49 छात्रों में 32 इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, 6 जूलॉजी, 3 वनस्पति विज्ञान, 2 मनोविज्ञान और एक सांख्यिकी विभाग का छात्र है। उन्होंने बताया कि छात्रों का यह प्रदर्शन, विश्वविद्यालय के अनुकूल शिक्षा वातावरण को प्रदर्शित करता है।

गेट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र (अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्ज्वल उपाध्याय, पूजा रंजन) इलेक्ट्रॉनिक विभाग के छात्र (आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक पटेल, प्रज्ञा प्रकाश), इलेक्ट्रिकल विभाग के छात्र (गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा) एवं मैकेनिकल विभाग के छात्र कुशाग्र वर्धन एवं सिविल विभाग के छात्र (हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार) का नाम शामिल है। साथ ही साइकोलॉजी की दो छात्राओं भावना गुप्ता और अर्चना यादव, स्टेटस्टिक्स से एक छात्र संपूर्णानंद गुप्ता व अन्य छात्रों ने भी सफलता हासिल की है। वहीं पांच भौतिकी विज्ञान से भी सफल हुए हैं।

भाषा विश्वविद्यालय के तीन छात्र हुए पास

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भाषा विश्वविद्यालय के सिविल इंजीनियरिंग विभाग से तीन छात्रों द्वारा गेट 2024 परीक्षा को उत्तीर्ण की गयी है। विभाग के विषय प्रभारी इंजीनियर कौशलेश शाह ने बताया कि तीनों अंतिम वर्ष के छात्र अतुल यादव, शिव कुमार चौधरी, मिंटू सिंह ने गेट 2024 परीक्षा पास किया है। अतुल यादव ने आल इंडिया रैंक 1332 प्राप्त किया है।

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण से संबंधित जानकारी जारी

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय और रेडियफ्यूजन के सहयोग से भारत लैब ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) 2022-23 से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों को जारी करने की घोषणा की है। यह प्रयास भारत भर में उपभोग पैटर्न और व्यय आदतों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो उद्योगों, विपणक और उत्पाद नवप्रवर्तकों के लिए अमूल्य जानकारी प्रदान करता है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा आयोजित भारत के भीतर विकसित हो रहे उपभोग रुझानों पर प्रकाश डालता है। घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) 2022-23 ग्रामीण और शहरी भारत में उपभोग की आदतों में महत्वपूर्ण बदलावों को दर्शाता है, जो ग्रामीण भारत में अनाज की खपत में 78 प्रतिशत की महत्वपूर्ण गिरावट के साथ-साथ फलों और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों पर खर्च में वृद्धि के रूप में चिह्नित है। उल्लेखनीय रूप से 1999-2000 में भारत के मासिक खाद्य व्यय में ताजे फलों का हिस्सा मात्र 1.42 प्रतिशत था जो 2022-23 में बढ़कर 2.54 प्रतिशत हो गया जो 78 प्रतिशत की पर्याप्त वृद्धि को दर्शाता है। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद 1999-2000 और 2022-23 के बीच ईंधन और बिजली पर मासिक खर्च 7.52 प्रतिशत से घटकर 6.66 प्रतिशत हो गया है। इसके विपरीत इसी अवधि के दौरान उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च 170 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है जो मासिक व्यय का 2.62 प्रतिशत से 6.89 प्रतिशत हो गया है। शिक्षा में व्यय में वृद्धि भारत के विकसित भारत की ओर बढ़ने का एक मजबूत संकेत है।

SWATANTRA BHARAT PAGE 3

लविवि के छात्र-छात्राओं ने खेलों में किया बेहतरीन प्रदर्शन

स्वतंत्र भारत संवाददाता, लखनऊ। लविवि के कुलपति प्रो.अलोक कुमार राय के संरक्षण में यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में एक्स्ट्रा करिकलर एक्टिविटीज सिनर्जी 2024 के अंतर्गत बी.फार्मा एवं डी.फार्मा छात्र-छात्राओं के मध्य क्रिकेट, वॉली बाल, एथेलेटिक्स प्रतियोगिता आयोजित की गई। रविवार को सिनर्जी 2024 प्रतियोगिता के समापन अवसर पर प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीया श्रेणी के विजेताओं का नाम घोषित किया गया। क्रिकेट में डी. फार्मा. द्वितीय वर्ष के छात्रों ने टॉस जीतकर फील्डिंग करने का निर्णय लिया एवं डी.फार्मा प्रथम वर्ष की टीम ने द्वितीय वर्ष की टीम को जीत के लिए 63 रन का लक्ष्य निर्धारित किया तथा 62 रन पर आल आउट करके जीत दर्ज किया। क्रिकेट का अगला मैच बी. फार्मा. द्वितीय वर्ष एवं बी. फार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच हुआ जिसमें बी. फार्मा प्रथम वर्ष ने जीत दर्ज की। डी. फार्मा प्रथम वर्ष एवं बी.फार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच क्रिकेट का फाइनल मैच खेला गया। जिसमें बी.फार्मा प्रथम वर्ष विजयी हुआ। वहीं, महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में बी. फार्मा एवं डी. फार्मा के छात्राओं ने क्रिकेट में प्रतिभाग लिया। बी.फार्मा की छात्राओं ने 02 विकेट खोकर 51 रन बनाये तथा डी. फार्म की छात्राओं ने जीत दर्ज की। पुरुष क्रिकेट में मैन ऑफ़ द सीरीज अवार्ड कुलदीप गोंड बी.फार्मा प्रथम वर्ष को दिया गया एवं महिला क्रिकेट में मानसी खरवार डी.फार्मा द्वितीय वर्ष को वुमन ऑफ़ द सीरीज अवार्ड दिया गया। वहीं,बास्केट बॉल प्रतियोगिता में बी.फार्मा तृतीय वर्ष के छात्र विजयी घोषित हुए। 100 मीटर रेस पुरुष वर्ग में अभिनय कुमार (बी. फार्मा प्रथम वर्ष) प्रथम श्रेणी, आशीष कुमार मौर्य (बी. फार्मा तृतीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी एवं हरी ओम (डी.फार्मा द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

लखनऊ के साहित्य में समायी गंगा-जमुनी संस्कृति

साहित्यक चर्चा व सम्मान समारोह के साथ लिटरेचर फेस्टिवल का हुआ समापन

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। सिर्फ खास नहीं बल्कि बेहद रोचक है। शहर के लोगों में अपना पन, साहित्य में समाज में मिलता है। गंगा जमुनी सभ्यता, संस्कृति का प्रतीक पूरे दुनिया में लखनऊ है। शायद यही वजह भी है लखनऊ में मंदिर को मुस्लिमों ने बनवाया और मस्जिद को हिन्दु ने बनवाया। इतना ही नहीं लखनऊ में उर्दू कवि दयाशंकर को नसीम लखनवी और आनन्दनारायण को मुल्ला कहकर पुकार लिया जाता था। लखनऊ विश्वविद्यालय के दो दिवसीय साहित्योत्सव के आखिरी दिन मालवीय सभागार में लखनऊ म्यूजिंग्स इन वर्स विषय पर साहित्यकारों, विद्वानों ने गंगा जमुनी तहजीब की कई मिसालें सामने रख दीं।

प्रसिद्ध उर्दू विद्वान और लखनऊ विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के पूर्व प्रमुख प्रोफेसर अब्बास रजा नैय्यर ने कहा लखनऊ की सुन्दरता को इमारतों से अलग समझाया। उन्होंने कहा कि लखनऊ की सुंदरता इसका सांप्रदायिक सौहार्द है क्योंकि यहां गुरुमा पंडिताइन ने एक मस्जिद बनवाई थी जिसे 'पंडैन की मस्जिद' के नाम से जाना जाता है, जबकि नवाबों ने अलीगंज मंदिर का निर्माण करवाया था। उन्होंने कहा कि यह केवल लखनऊ ही है जहां उर्दू कवियों को पंडित दयाशंकर 'नसीम' लखनवी, बृज नारायण धर 'चकबस्त', आनंद नारायण को 'मुल्ला' कहकर बुलाया गया। वहीं प्रसिद्ध उपन्यासकार रतन नाथ धर को 'सरशार' कहकर पुकारा जाता था। यहां तक कि दिए गए नामों में भी धार्मिक सीमाओं को पार करने वाली उपाधियों से नवाज़ा गया। ग्रामीण जीवन और महिला अधिकार जैसे मुद्दों से परिचित कराया। व्यंग्य कवि पंकज प्रसून ने अपनी व्यंग्य के शहर में लिपटी कविताओं से सभी को हास्य की चाशनी में डुबोया। उन्होंने लखनऊ में टेढ़ीपुलिया को टेढ़ा पुल, बदनारिया बाग को मादा बंदरों का बगीचा, चौपटिया को बेकार चौराहा और अन्य स्थानों के अभिनव नामकरण से दर्शकों को हंसा-हंसा कर लोटपोट कर दिया।

जायकों की शब्दावली और फायदे भी गिनाये: लखनऊ विश्वविद्यालय साहित्योत्सव के तीसरे सत्र में जायका ए लखनऊ पर वक्ताओं ने अपने विचार रखे। प्रो. राकेश चन्द्रा के संचालन में हुए इस सत्र में लखनऊ के तमाम जायको और उनके साथ बने रिश्तों पर बात हुई। डा. रश्मि वैद्य, डा. नूर खान, डा. राजकुमार सक्सेना ने भारत और खासतौर पर लखनऊ के पकवानों की विधि, परोसने का सलीका, उनके रंग और खुशबू की शब्दावली से मिलाया। मारवाड़ी भोजन और लखनऊ शहर पकवानों के अन्तर्सम्बंधों पर भी ध्यान आकर्षित किया। राजकुमार ने दक्षिण भारत के मसालेदार पकवान के विशेष लाभ का वर्णन किया। प्रो. निशी पाण्डेय ने मेहमानों को सम्मानित किया। इससे पूर्व साहित्योत्सव का आगाज प्रो. अल्का पाण्डेय समकालीन लेखक अलंकार रस्तोगी के साथ संवाद से हुआ। जिसमें व्यंग्य विधा के लेखन की प्रक्रिया, सार्थकता और वर्तमान युवा पीढ़ी का व्यंग्य विधा से बढ़ते अलगाव के प्रमुख कारणों पर चर्चा हुई। इसी क्रम मे प्रोफेसर फातिमा रिजवी ने लेखिका और सत्या सरन के साथ संवाद किया।

लुबना सलीम के अभिनय ने दर्शकों को बांध लिया

साहित्योत्सव की आखिरी शाम मशहूर लेखक जावेद सिद्दीकी के लिखे नाटक गुडम्बा का मंचन किया गया। जिसका निर्देशन सलीम आरिफ ने किया और लुबना आरिफ ने इस खास कहानी को अपने एकल अभिनय से दर्शकों तक पहुंचाया। खास बात रही कि उम्दा अभिनय और संवाद की टाइमिंग ने दर्शकों पूरे मंचन के दौरान बांधे रखा। गुडम्बा एक दिल छू लेने वाला नाटक है। कहानी एक महत्वाकांक्षी युवा लड़की अमीना (लुबना सलीम) के इर्द-गिर्द घूमती है, जो शादी कर लेती है और सोचती है कि उसके सपनों का राजकुमार उसकी प्रार्थनाओं से भगवान ने दिया है। जटिल घरेलू राजनीति वाले एक पुराने विस्तारित संयुक्त परिवार के घर में एक बहू बनकर रह जाती है। अमीना हास्य उत्साह और परिवर्तन की कहानी है।

एलयू के 44 छात्रों ने किया गेट क्वालीफाई

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के 44 छात्रों, जिसमे 32 इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी विभाग, 06 जूलॉजी, 03 वनस्पति विज्ञान, 02 मनोविज्ञान और 01 सांख्यिकी विभाग के छात्रों ने इस परीक्षा को सफलतापूर्वक पास किया। छात्रों का यह प्रदर्शन, विश्वविद्यालय के अनुकूल शिक्षा वातावरण को प्रदर्शित करता है।

गेट की परीक्षा को उत्तीर्ण करने वाले छात्रों में कंप्यूटर कंप्यूटर साइंस एंड आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के छात्र दिवांशु शाक्य, कंप्यूटर साइंस के छात्र (अक्षिता सिंह, सौरव पांडे, अरविंद श्रीवास्तव, शिवम पटेल, श्रुति यादव, आयुष विश्वकर्मा, विकास कश्यप, हर्षित कटियार, अंजली सिंह, प्रखंड पटेल, अनन्या वर्मा, विजया अग्रवाल, असर आजम, उज्जवल उपाध्याय, पूजा रंजन) इलेक्ट्रॉनिक विभाग के छात्र (आदित्य त्रिपाठी, चिराग पुरवार, अभिषेक यादव, विनायक पांडे, विवेक कुमार पटेल, प्रज्ञा प्रकाश), इलेक्ट्रिकल विभाग के (गुलशन सिंह, महाबली मौर्य, विनय वर्मा) एवं मैकेनिकल विभाग के छात्र कुशाग्र वर्धन एवं सिविल विभाग के छात्र (हिमांशु तिवारी, पंकज यादव, अतुल यादव, पीयूष कुमार, मृत्युंजय पांडे, शिवांगी गंगवार) सम्मिलित है साथ ही साइकोलॉजी की दो छात्राओं भावना गुप्ता एवं अर्चना यादव, स्टेटस्टिक्स से एक छात्र संपूर्णानंद गुप्ता व अन्य छात्रों ने गेट-2024 की परीक्षा क्वालीफाई की। चयनित छात्रों को विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बधाई दी और उनके उज्जवल भविष्य के लिए आशीर्वाद दिया।

बिजली, ईंधन में खर्च घटा, फल, खाद्य पदार्थों हुई वृद्धि

भारत लैब ने घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2022-23 से प्राप्त जानकारी को जारी किया

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय प्रोफेसर आलोक कुमार राय ने बताया कि यह महत्वपूर्ण प्रयास भारत भर में उपभोग पैटर्न और व्यय आदतों का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है, जो उद्योगों, विपणक और उत्पाद नवप्रवर्तकों के लिए अमूल्य जानकारी प्रदान करता है। सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा आयोजित एचसीईएस 2022-23, भारत के भीतर विकसित हो रहे उपभोग रुझानों पर प्रकाश डालता है।

घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण (एचसीईएस) 2022-23 ग्रामीण और शहरी भारत में उपभोग की आदतों में महत्वपूर्ण बदलावों को दर्शाता है, जो ग्रामीण भारत में अनाज की खपत में 78 फीसदी की महत्वपूर्ण गिरावट के साथ-साथ फलों (ताजे और सूखे दोनों) और पैकेज्ड खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों पर खर्च में वृद्धि के रूप में चिह्नित है। उल्लेखनीय रूप से, 1999-2000 में भारत के मासिक खाद्य व्यय में ताजे फलों का हिस्सा मात्र 1.42 फीसदी था, जो 2022-23 में बढ़कर 2.54 फीसदी हो गया, जो 78 फीसदी की पर्याप्त वृद्धि को दर्शाता है। इसी अवधि में सूखे मेवों में 0.3 फीसद से 1.17 फीसद तक की और भी बड़ी वृद्धि देखी गई, जो लगभग 300 फीसदी की वृद्धि है। आर्थिक चुनौतियों के बावजूद, 1999-2000 और 2022-23 के बीच ईंधन और बिजली पर मासिक खर्च 7.52 फीसद से घटकर 6.66 फीसदी हो गया है। इसके विपरीत, इसी अवधि के दौरान उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं पर खर्च 170 फीसद से अधिक बढ़ा है, जो मासिक व्यय का 2.62 फीसद से 6.89 फीसदी हो गया है।

विकसित भारत की ओर एक और महत्वपूर्ण बदलाव पिछले दो दशकों में शिक्षा व्यय में दर्ज लगभग 70 फीसदी वृद्धि द्वारा दर्शाया गया है, जो उच्च शिक्षा और अपस्किलिंग पर ध्यान केंद्रित करता है। इसी तरह, इसी अवधि में रेस्तरां और मनोरंजन जैसी उपभोक्ता सेवाओं पर खर्च 2.98 फीसद से बढ़कर 5.08 फीसद हो गया है, जो ग्रामीण जीवन शैली में सेवा-उन्मुख उद्योगों के बढ़ते एकीकरण को दर्शाता है। रिपोर्ट ग्रामीण भारत के विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों में मासिक व्यय में भिन्नता को भी उजागर करती है।

गोवा, उत्तराखंड और राजस्थान जैसे राज्य, जिनमें कृषि से परे मजबूत पर्यटन उद्योग हैं, उनका मासिक व्यय सबसे अधिक होता है। इसके विपरीत, तेलंगाना और हरियाणा जैसे राज्य अपने ग्रामीण क्षेत्रों में कम मासिक व्यय प्रदर्शित करते हैं। उत्तर प्रदेश के संदर्भ में ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एमपीसीई 3,191 (भारत 3,773) और शहरी क्षेत्रों के लिए यह 5,040 (भारत 6,459) है इसलिए हमें उत्तर प्रदेश में अंतर को समझने और अपने राज्य एमपीसीई को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। एक महत्वपूर्ण कारण अनौपचारिक क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करने और इन लोगों की मासिक आय बढ़ाने के तरीकों और प्रथाओं को सुनिश्चित करने की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा, यह देखा गया है कि गैर-कृषि स्वरोजगार में लगे ग्रामीण परिवार अपने कृषि समकक्षों की तुलना में 4,159 का औसत मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (एमपीसीई) प्रदर्शित करते हैं, जो 3,702 है। भारत लैब लखनऊ विश्वविद्यालय और रेडियफ्यूजन के बीच एक अग्रणी संयुक्त उद्यम है, जो भारत के उपभोग पैटर्न और व्यय आदतों पर शोध और विश्लेषण करने के लिए समर्पित है। शिक्षा में व्यय में वृद्धि भारत के विकसित भारत की ओर बढ़ने का एक मजबूत संकेत है। निष्कर्ष आने वाले वर्षों में उद्योगों को संभावनाएं प्रदान करते हैं। ब्रांडों और विपणकों के पास इन उभरते रुझानों का लाभ उठाने का अवसर है।

छात्र-छात्राओं ने दिखाया क्रिकेट व एथेलेटिक्स में जलवा

वरिष्ठ संवाददाता (vol)

लखनऊ। कुलपति प्रो. अलोक कुमार राय के संरक्षण में यूनिवर्सिटी ऑफ लखनऊ इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मास्यूटिकल साइंसेज में एक्स्ट्रा करिकलर एक्टिविटीज सिनर्जी 2024 के अंतर्गत 17 मार्च को बीफार्म एवं डीफार्म की छात्र छात्राओं के मध्य क्रिकेट, वॉली बाल, एथेलेटिक्स एवं

● एलयू में एक्स्ट्रा करिकलर एक्टिविटीज सिनर्जी 2024 का हुआ आयोजन

प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है।

17 मार्च को सिनर्जी प्रतियोगिता का समापन हो गया और प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीया श्रेणी के विजेताओं का नाम घोषित किया गया। क्रिकेट में डीफार्मा द्वितीय वर्ष के छात्रों ने टॉस जीतकर फील्डिंग करने का निर्णय लिया एवं डी फार्मा प्रथम वर्ष की टीम ने द्वितीय वर्ष की टीम को जीत के लिए 63 रन का लक्ष्य निर्धारित किया तथा 62 रन पर आल आउट करके जीत दर्ज किया। क्रिकेट का अगला मैच बीफार्मा द्वितीय वर्ष एवं बीफार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच हुआ जिसमे बीफार्मा प्रथम वर्ष ने जीत दर्ज की। डी फार्मा प्रथम वर्ष एवं बीफार्मा प्रथम वर्ष के छात्रों के बीच क्रिकेट के फाइनल मैच का आयोजन किया गया जिसमे बी फार्मा प्रथम वर्ष विजयी हुआ। वही महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में बी फार्मा एवं डी फार्मा के छात्राओं ने क्रिकेट में प्रतिभाग लिया। बीफार्म की छात्राओं ने 2 विकेट खोकर 51 रन बनाये तथा डीफार्म की छात्राओं ने जीत दर्ज की। पुरुष क्रिकेट में मैन ऑफ द सीरीज अवार्ड कुलदीप गोंड (बीफार्मा प्रथम वर्ष) को दिया गया एवं महिला क्रिकेट में मानसी खरवार (डीफार्मा द्वितीय वर्ष) को वुमन ऑफ द सीरीज अवार्ड दिया गया। बास्केट बॉल प्रतियोगिता में बीफार्मा तृतीय वर्ष के छात्र विजयी घोषित हुए। 100 मीटर रेस पुरुष वर्ग में अभिनय कुमार (बीफार्म प्रथम वर्ष) प्रथम श्रेणी, आशीष कुमार मौर्य (बीफार्म तृतीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी, एवं हरी ओम (डी फार्म द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर रेस महिला वर्ग में शालिनी (डी फार्म प्रथम वर्ष) प्रथम श्रेणी, पल्लवी (डीफार्म द्वितीय वर्ष) द्वितीय श्रेणी एवं गोल्डी (डीफार्म द्वितीय वर्ष) तृतीया श्रेणी में स्थान प्राप्त किया।

TOI PAGE 3

LU LIT FEST CONCLUDES WITH DELIGHTFUL SESSIONS AND SHOWS

Cultural fusion: 'Only in Lucknow, Muslim constructs a temple and Hindu a mosque'

Mohita.Tewari@timesgroup.com

A session underway at lit fest (Ajay Kumar)

Lucknow: Beyond the bustling streets and rich history lies the true essence of Lucknow: a city where religious divides blur and cultural harmony reigns. Here, a Muslim builds a temple, a Hindu a mosque, and Urdu poets transcend labels with blended names like Pandit Dayashankar "Naseem Lakhnawi" and Anand Narain Mulla. This unique spirit of "Ganga-Jamuni tehzeeb" (composite culture) took center stage during the last day of the University of Lucknow's literature festival held at Malviya Hall on Sunday.

Experts from the field of literature shared stories that exemplified Lucknow's remarkable communal harmony. Renowned Urdu scholar and former head of Lucknow University's Urdu department, Prof Abbas Raza Nayyar, highlighted the city's beauty. He spoke of how Guruma Pandain, a Hindu, commissioned the construction of a mosque known as "Pandain Ki Masjid," while the Nawabs, Muslim rulers, built the Aliganj temple. This harmony extended even to names and titles, Prof Nayyar pointed out. Urdu poets like Brij Narayan Dhar ('Chakbast') and Ratan Nath Dhar ('Sarshar') were addressed with titles that transcended religious boundaries.

Adding to the discussion, Padma Shri Vidya Vindu Singh, known for her Awadhi, Hindi, and folk writings, expressed her deep love for Lucknow. "Lucknow ne aisa moh mai bandha hai ki Lucknow ko chhodh kar jaane ka koi mann nahi hota hai" (Lucknow has bound me in such love that I never want to leave the city), she said. During the session, she spoke about her unconventional writing style, which tackles issues like motherhood, and women's rights, all interwoven within her poems.

Prof AP Pandey, a renowned poet and dramatist, captivated the audience with his readings of poems, Haiku, and other writings that explored themes of life, love, and spirituality. Pankaj Prasoon, another poet, injected a touch of humour into the session with his satirical poems and witty one-liners. His creative reimagining of Lucknow's landmarks, like Tedhipulia as a "zigzag bridge" and Badnariya Bagh as the "garden of female monkeys," left the audience in stitches.

Play narrates bitter-sweet stories of life

Times News Network

Lucknow: The two-day LU Lit Fest culminated with staging of a play 'Gudamba' at AP Sen Auditorium of the university on Sunday. Written by renowned writer Javed Siddiqui and directed by theatre director and producer Salim Arif, the story used Gudamba (a dish made out of unripe mangoes and jaggery) as a metaphor for life.

Actress Lubna Salim performs in play Gudamba (Ajay Kumar)

The 85-minute mono-play revolves around the protagonist Amina Jootawala (Lubna Salim) who hails from a traditional family. She narrated bitter-sweet experiences of life and unfolded how he got married at an early age and thinks of her husband as a man of her dreams.

However, some years later she finds out that he was having an extra-marital affair with a rich woman. With help from a friend, she gets rid of his affair. With humorous turns and subtle acting, she enchanted the audience and kept them hooked throughout her performances.

Rare spotlight on Meena Kumari's poetic side

Times News Network

Session on Meena Kumari (Ajay Kumar)

Lucknow: Did you know that actor Meena Kumari was as good in poetry as she was in acting? This was brought to light during a session 'Meena Kumari: Ek Mukhtasar Dastan' staged at Malviya auditorium of Lucknow University during LU Literature Festival on Sunday.

City-based performer Harsh Vardhan narrated the Dastan, while Vasundhara Shukla performed a classical dance on ghazals written by Meena Kumari. "Meena Kumari was born in a family which had a background in movies. She started her career at the age of eight with the 1952 movie Baiju Baawra. She continued to work in various movies, including Pakeezah and Sahib Bibi aur Ghulam and became the top actresses of the 60s. However, her divorce with film director Kamal Amrohi left a lasting impact on her life leading to her collapse from Bollywood," said Vardhan. He also rendered a few ghazals written by Meena Kumari.

Earlier, a santoor recital – 'Tarang: Classical Notes, Times Emotions' by Pandit Dishari Chakraborty was organized.

'Not just eateries, home kitchens also epitomise city's delicacies'

Mohita.Tewari@timesgroup.com

Lucknow: The charm of Lucknow extends beyond the delicacies of its famous eateries. Home kitchens or "ghar ki rasoi" also epitomise city's culinary delight with exquisite flavours, traditions, and an aroma that embodies the essence of "Nazakat" (delicacy) and "Nafasat" (subtlety) in the cooking process. This sentiment was echoed by food and literary experts at the Lit fest.

During "Zaika-e-Lucknow" session, moderated by Prof Rakesh Chandra, experts pointed out that "Nazakat" and "Nafees" are not just hallmarks of Lucknow's culture but also permeate its culinary scene.

"The word 'Nafees' signifies something distinguished, aesthetically pleasing, and a delight to the senses, perfectly capturing the essence of Lucknow's cuisine," said Noor Khan, an educationist and former principal of Karamat Girl's PG College.

She added, "Popular perception often equates Lucknow's cuisine with street food like kebabs and naharis. However, the hidden treasures residing within Lucknow's homes are frequently overlooked... Unwritten culinary rules followed in most Lucknowi households are passed down through generations. For instance, everyone knows that arhar (pigeon pea) dal must be fried with garlic. Take Korma, a common mutton dish prepared at home. It transforms into a 'nafees' creation when the onions are sliced uniformly and browned to a crisp, golden hue – not overcooked or underdone. Ginger, garlic, and other spices are ground meticulously to prevent lumps in the gravy."

RK Saxena, former principal of the Institutes of Hotel Management in Lucknow and Mumbai, drew parallels between Lucknow's cuisine and historical events like the Italian Renaissance and the French Revolution, highlighting external influences.

Saxena also delved into the history and rationale behind slow cooking in Indian cuisine.

HINDUSTAN TIMES PAGE 3

{ CURTAINS DOWN ON EVENT }

LU Lit Fest: A delightful blend of verse, cuisine enchants attendees

HT Correspondent
letters@htlive.com

Nishi Pandey (centre) presented panelists of 'Zaika-e-Lucknow' with mementos, (from left) Rashmi Vaid, Noor Khan, Rakesh Chandra, and Rajkumar Saxena. SOURCED

LUCKNOW: The second and final day of the inaugural LU Lit Fest lived up to expectations with engaging panel discussions centered around topics close to the heart of every Lucknowite: poetry and food. Alongside the enthusiastic young audience from the first day, Sunday saw an influx of literature enthusiasts and faculty members eager to partake in the insightful discussions.

The poetic essence of Lucknow

The session titled 'Lucknow: Musings in Verse' transformed into a captivating poetry symposium featuring luminaries such as Padma Shri Vidya Vindu Singh, Pankaj Prasun, AP Pandey, Abbas Raza Nayyar and others. Reciting couplets, ghazals, and poetry, they left the audience yearning for more, while LU professor Ranu Uniyal moderated the session.

Abbas Raza Nayyar eloquently depicted the city's beauty and sentiment through his poems, paying homage to Lucknow's great poets. Padmashri Vidya Vindu Singh mesmerised the audience with haikus and her own compositions, reminiscing about her early days of Hindi poetry. Known for his humorous writing, Pankaj Prasun entertained with his piece 'Ladkiyan badi ladaka hote hai' (Girls like to fight), shedding light on the daily struggles faced by women. AP Pandey engaged the audience with his expertly crafted sonnets.

Food for thought

The session on food and cuisine, titled 'Zaika-e-Lucknow,' led by Noor Khan, former college principal and core team member of the Sanatkada Festival, left mouths watering as she vividly described the colors, aromas, tastes, and presentation of Lucknow's home-cooked delicacies. Rashmi Vaid and Rajkumar Saxena also shared their insights, drawing parallels between Marwari cuisine and Lucknow's flavors, and discussing the evolution of foreign cuisines over time.

As the session concluded just before lunch, attendees were left with a hearty appetite for both literary and culinary delights.

GUESTS DISCUSS SATIRE IN WRITING, WOMEN EMPOWERMENT

HT Correspondent
letters@htlive.com

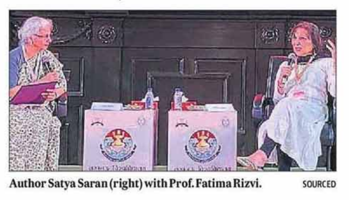

Author Satya Saran (right) with Prof. Fatima Rizvi. SOURCED

LUCKNOW: Discussions on the second and final day of the Lucknow University's Literature Festival ranged from satire as a genre to the progress of women in society.

The morning session began with a conversation between contemporary writer Alankar Rastogi and Professor Alka Pandey on the writing process for satire, its importance, and the primary causes of the present generation's increasing distancing from the genre.

This was followed by a session between another contemporary writer Satya Saran and professor Fatima Rizvi.

Saran, a consultant editor at Penguin Random House India, gave the message of empowering oneself by observing the progress of women in society and the challenges faced by women.

MUSIC, DRAMA KEEP AUDIENCE HOOKED

The staging of 'Meena Kumari: Ek Mukhtasar Dastaan'. SOURCED

LUCKNOW: LU's Lit Fest on Sunday ended on a cultural note with a number of performances taking place on the university campus.

A session titled 'Tarang-classical Notes, Timeless Emotions' enthralled the audience. Pandit Dishari Chakraborty on santoor, Sumit Malik on tabla and Swami Shri Ramadeshanand on dholak kept the audience hooked, as did a dance performance that followed. A play titled "Meena Kumari: Ek Mukhtasar Dastaan" was presented by the Humanity Association of the college.

To close off the festival, a play 'Gudamba' written by a screenwriter Javed Siddiqui and directed by Salim Arif, the compelling monodrama staged by Lubna Salim highlighted the realities of life with her engaging enactment. HTC